

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

प्रेरणाशतकम्

ग्रन्थ प्रणेता

अनन्त श्रीविभूषितं जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री " श्रीजी " महाराज

सत्प्रेरणा स्तोत्र-प्रेरणाशतक

परम पूज्य श्रीआचार्यचरण शरणागतवत्सल है। राजा-रंक, योग्य, विज्ञ-जिज्ञासु, विद्वान्-विद्यार्थी सभी प्रकार के जन आपका सान्निध्य पाने के लिए उत्कण्ठित रहते हैं। आपश्री महान् होते हुए भी सर्वजन सुलभ है। विद्यार्थियों-बालकों पर आपश्री का सहज वात्सल्य अनिर्वचनीय है। प्रथम बार जब विद्याध्ययन के लिए मैं श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ आया था नये स्थान और अपरिचितजनों के साथ रहते समय उदास रहने लगा, मन नहीं लग रहा था तब आचार्यश्री ने स्वयं अपनी बाल्यावस्था की अनेक घटनाओं को व्यक्त कर परिस्थियों से अवगत कराया और धैर्य पूर्वक अध्ययन करने की प्रेरणा दी।

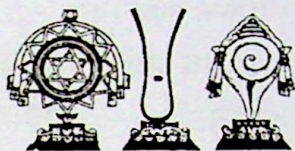
आपश्री ने अपनी निज सेवा में रखकर और आचार्यपीठ की सेवा करने का जो सौभाग्य प्रदान किया है यह सब आपश्री के प्रेरणाप्रद उपदेश का फल है। आपश्री समय-समय पर परिकरजनों को अनेक प्रेरणादायी प्रसंग सुनाते रहते हैं किन्तु उनका सबको स्मरण नहीं रहता। सभी भक्तजनों, छात्रों जिज्ञासुओं के हृदय में प्रेरणा नवीनवत् स्फुरित होती रहे एतदर्थ पूज्यचरणों ने शताधिक छन्दोबद्ध संस्कृत पद्यों में उन प्रेरणाओं का प्रणयन कर ग्रन्थ रूप में “प्रेरणाशतकम्” नाम दिया है। इन पद्यों का सरल हिन्दी भावार्थ कर ग्रन्थ को सर्वजन संवेद्य बनाया गया है। इस प्रकार सत्प्रेरणाओं का स्तोत्र “प्रेरणाशतक” समस्त श्रद्धालुजनों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हुए कुमार्ग की ओर जाने से अवश्य रोकेगा मैं ऐसा दृढ विश्वास करता हूँ।

श्रीचरणसेवक-

श्रीओमप्रकाश शर्मा शास्त्री निम्बार्कभूषण

निजि सचिव-अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

प्रेरणाशतकम्

ग्रन्थ प्रणेता:--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री "श्रीजी" महाराज

प्रकाशक--

विद्वत्परिषद्

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ
सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर (राज०)

मार्गशीर्ष शुक्ल व्यञ्जन द्वादशी, बुधवार
श्रीनारदजयन्ती महोत्सव, दिनाङ्क ७/१२/२०११

पुस्तक प्राप्ति स्थान--

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

फोन नं० - 01497 -227831

प्रथमावृत्ति--२०००

मुद्रक--

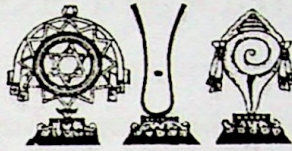
श्रीनिम्बार्क - मुद्रणालय

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर

पाँच रुपये

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

समर्पणम्

अस्मद्गुरोः पदाम्भोजं भवेतापनिवारकम् ।
नत्वाऽर्प्यते च सश्रद्धं ‘प्रेरणाशतकं’ प्रियम् ॥

मिति - मार्गशीर्ष शुक्ल व्यञ्जन द्वादशी

बुधवार, वि० सं० २०६८

दिनाङ्क - ७ / १२ / २०११

श्रीनारद जयन्ती महोत्सव

समर्पकः -

अस्मद्गुरुवर्यपदाम्भोजमकरन्दकामः -

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

स्तोत्र साहित्य की परमोत्कृष्टता

यद्यपि धर्माचार्यवर्यो सन्त-महात्माओं एवं सत्पुरुषों के आचार व्यवहारों से इतर मानव समुदाय को जीवन सुधारने की प्रेरणा मिलती रहती है तथापि उनके प्रेरणादायक सदुपदेश संस्कृत भाषा में हों या लोक भाषा में हों वे सदा ही मनुष्य को पथ भ्रष्ट होने से बचाते हैं। हमारे जीवन में ऐसी प्रेरणाओं की निरन्तर आवश्यकता होती है। जैसे दीपक की ज्योति से निकलने वाले धूम से शीशादि स्वच्छ द्रव्य मलिन हो जाते हैं उनको स्वच्छ करने के लिए जल-वस्त्रादि साधनों की अपेक्षा रहती है उसी प्रकार विषयेन्द्रिय संयोग से निकलने वाले मोहासक्त मल से स्वच्छ मन धूमिल होजाता है उसको स्वच्छ रखने के लिए सत्संग एवं सत्प्रेरणा रूपी साधन की परम आवश्यकता होती है।

इसी विषय को ध्यान में रखते हुए परम दयालु पूज्यपाद जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री “श्रीजी” महाराज ने सरल सुबोध देवभाषा में पद्यमय “प्रेरणाशतकम्” की रचना की है। भाषानुवाद सहित उसका प्रकाशन किया जा रहा है जो प्रत्येक साधक भक्तजनों के लिए परम हितकर है। जो भी इसका पठन-मनन करेंगे उनका जीवन निश्चय ही मङ्गलमय बनेगा। शतक में पूज्य आचार्यश्री ने मनुष्य के कर्तव्याकर्तव्य, ग्राह्य-त्याज्य, सत्कर्म-

असत्कर्म, उत्थान-पतन आदि विषयों परिस्थितियों का दिग्दर्शन कराते हुए दुर्गुणों, दुष्परिणामों से बचने के उपायों का भी सुगम रीति से मार्ग दर्शन कराया है। समस्त श्रद्धावान् धर्मानुरागी, भगवत्प्रेमी महानुभावों जो संस्कृतज्ञ हों या संस्कृतज्ञ न हों उभयविध भावुक-रसिकजनों को आचार्यानुकम्पारूप सत्प्रेरणा प्रस्तुत शतक द्वारा प्राप्त होती रहे इसी भावना के साथ लेखनी को विराम देता हूँ।

मिति - मार्गशीर्ष शुक्ल द्वादशी बुधवार, वि० सं० २०६८

दिनाङ्क - ७ / १२ / २०११, श्रीनारद जयन्ती महोत्सव

आचार्यचरणचञ्चरीक:-

पं० वासुदेवशरण उपाध्याय

व्या० सा० वेदान्ताचार्य

प्राचार्य-

श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय

निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद

जि० अजमेर (राजस्थान)

उत्तमप्रेरणा सर्वसुखदायी

पुरातन काल से ही मानव वर्ग को आचार्यों एवं महापुरुषों के द्वारा प्रदत्त उपदेशों से प्रेरणा प्राप्त होती रही है। महापुरुषों का समग्र जीवन जनकल्याण व उनकी रचनायें प्राणीमात्र का मार्ग दर्शन करती है। जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण प्रातः स्मरणीय पूज्य आचार्यचरण हैं। आपश्री के आदर्शमय जीवन से हमें सदैव प्रेरणा तो प्राप्त होती ही है। साथ ही आपश्री की कृतियों के द्वारा जो उपदेश व मार्गदर्शन प्राप्त होता है वह अवर्णनीय है। पूज्य आचार्यश्री की प्रत्येक रचना विलक्षण से विलक्षण है जिसके पठनमात्र से ही परमानन्दानुभूति होती है।

आपश्री की लेखनी वर्तमान अवस्था आधिक्य और स्वास्थ्य की प्रतिकूलता में भी अनवरत प्रवाहित है। इसी प्रवाह में प्रस्तुत ग्रन्थ “प्रेरणाशतक” निःसन्देह समस्त भगवच्चरणानुरागियों के लिये परम प्रेरणादायी होगा। आचार्यश्री की अद्भुत रचनाओं के लिये सनातन धर्म जगत् सदैव आनन्दित रहेगा। निम्नांकित पद्य के द्वारा अपना भाव समर्पित करने का प्रयास कर रहा हूँ

प्रेरणाशतक प्रदान है, प्राणी मात्र प्रकास ।

प्रातर्वन्द्य प्रणाम नित, प्रतिपल होत प्रयास ॥

मिति - मार्गशीर्ष शुक्ल द्वादशी बुधवार, वि० सं० २०६८

दिनाङ्क - ७ / १२ / २०११, श्रीनारद जयन्ती महोत्सव

-श्रीश्यामशरणदेव

उत्तराधिकारी-युवराज - अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ
सलेमाबाद, किशनगढ़, अजमेर (राजस्थान)

प्रेरणादायी “प्रेरणाशतक”

श्रीसर्वेश्वर-राधामाधव भगवान् की जब प्रेरणा होती है तभी सत्कार्य का शुभारम्भ होता है। यह प्रस्तुत लघु कलेवर रूप ग्रन्थ भी श्रीभगवत्कृपा प्रसाद ही है। इस ग्रन्थ में प्रेरणाप्रद हिन्दी भाषा में भावार्थ सहित १०३ श्लोक निहित हैं। जिस किसी प्रकार अस्वस्थता की स्थिति में ८३ वर्ष की आयु में श्रीसर्वेश्वर प्रभु की दिव्य प्रेरणा से ही यह कार्य सम्पादित हुआ है।

परम श्रद्धालु भगवन्निष्ठ भावुक भक्तजनों का यह कर्तव्य है कि इस ग्रन्थ का यथावसर अनुशीलन कर हृदयग्राही वचनों को अपनी उपयोगिता में लें जिससे उक्त ग्रन्थ की सार्थकता हो।

यह मानव जीवन उन अनन्तकृपाकोष भगवान् सर्वेश्वर श्रीराधामाधव कृपाजन्य है। एतद्विषयक यह वचन परम हृदयग्राही है--

दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षणभङ्गुरः ।

तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुण्ठप्रियदर्शनम् ॥

(श्रीमद्भा० स्क० ११ अ० २ श्लोक २६)

अर्थात् क्षणभङ्गुर शरीरों में यह मानव शरीर अत्यन्त दुर्लभ है और उसमें भी वैकुण्ठाधिपति उन सर्वान्तरात्मा सर्वेश्वर श्रीविष्णु भगवान् के प्रिय पार्षदों का दर्शन और भी दुर्लभ है। तब श्रीहरि का दर्शन तो और भी दुर्लभतम है।

अतएव इस अति दुर्लभ मानव शरीर को प्राप्त करके उन

जगन्नियन्ता सर्वेश्वर श्रीराधामाधव भगवान् का जितना भी स्मरण-चिन्तन-ध्यान हो सके करना परम अभीष्ट है। इसी में जीवन की परम चरितार्थता है। यह “प्रेरणाशतक” ग्रन्थ इसी का द्योतक है जिसे अनुशीलन कर परमानन्द का अनुभव करें।

मिति- मार्गशीर्ष शुक्ल व्यञ्जन द्वादशी
श्रीनारदजयन्ती, बुधवार
वि० सं० २०६८ दिनाङ्क ७/१२/२०११

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

मङ्गलाचरणम्

(१)

वन्दे सर्वेश्वरं देवं श्रीसनकादिसेवितम् ।
राधामाधवपादाब्जं नौमि निम्बदिवाकरम् ॥

(२)

श्रीहरिव्यासदेवश्च परमाचार्यमाश्रये ।
परशुरामदेवं हि प्रणमामि पुनः पुनः ॥

(३)

श्रीबालकृष्णमाचार्यं जगद्गुरुवरं परम् ।
प्रणम्य तन्यते भक्त्या “प्रेरणाशतकं” शुभम् ॥

प्रेरणाशतकम्

(१)

वृथाऽस्ति जीवनं लोके हरेराराधनं बिना ।
नराणां हीनचेष्टानां संसारासक्तचेतसाम् ॥

जिनका चित्त संसार में आसक्त बना हुआ है, जिनकी चेष्टायें निम्नस्तर की हैं। जगन्त्रियन्ता सर्वेश्वर श्रीहरि के आराधना रहित जिनका इस जगत् में जीवन है ऐसे मनुष्यों का यह जीवन निरर्थक है ॥१॥

(२)

समययापनं तेषां जनानां हीनकर्मणि ।
जायते विस्मयो चाऽत्र कथं श्रेयः प्रजायते ॥

अति निन्दनीय नीच कर्मों में जिन मानवों का समय व्यतीत होता है और जिससे यह अतीव आश्चर्य हो रहा है कि उनका कल्याण कैसे होगा ॥२॥

(३)

परनिन्दारतानाञ्च पराऽऽर्तमुदितात्मनाम् ।
परदोषप्रसक्तानां नराणां व्यर्थजीवनम् ॥

अन्य जनों की निन्दा करने में तत्पर तथा दुःखी जनों को देखकर जिनका मन प्रसन्न होता है और इतर पुरुषों के दोष दृष्टि में ही लगे रहते हैं, ऐसे मनुष्यों का जीवन व्यर्थ है।

(४)

मुखे दुर्वचनं येषां तिष्ठत्यहो च सर्वदा ।
लोकानामहितं कुर्युः तेषां सङ्गो हि घातकः ।

बड़े ही कष्ट का यह प्रसङ्ग है कि जिन व्यक्तियों के द्वारा अपने मुख में सब समय दुर्वचन ही रहते हैं तथा दूसरों का अहित ही करते रहते हैं ऐसों का सङ्ग करना ही अहितकर है ॥४॥

(५)

सततं कालचक्रञ्च भ्रमति मस्तकोपरि ।
तथापि नैव शोचन्ति चित्रं किमधिकं नराः ॥

यह कालचक्र निरन्तर अपने मस्तक पर मंडरा रहा है तथापि ये मानव विचार नहीं कर रहे हैं, इससे बढकर क्या आश्चर्य होगा ॥५॥

(६)

मोहमये महाघोरे संसारे क्लेशसंकुले ।
कथं व्रजति रे चित्त ! हा कष्टमतिदुस्सहम् ॥

जिसमें विविध प्रकार के क्लेश हैं मोह रूप अतिशय घोर स्वरूप इस संसार के भौतिक कृत्यों में इस मानव का मन सतत लगा रहता है जो अतीव असहनीय परम कष्ट दायक है ॥६॥

(७)

अत्यभिमानमादाय यो हि तिष्ठति मानवः ।
स नरः क्लेशमाप्नोति न ह्यत्र कोऽपि संशयः ॥

अतिशय अभिमान पूर्वक जो मनुष्य अवस्थित रहता है वह निश्चय ही महाक्लेश को प्राप्त करता है इसमें लेशमात्र भी

सन्देह नहीं है ॥७॥

(८)

यो विप्रः प्रत्यहं लोके भजति श्रीहरिं परम् ।
सर्वेश्वरं जगद्धेतुं लभते स परं पदम् ॥

जो विप्र (ब्राह्मण) प्रतिदिन जगज्जन्मादिहेतु परात्पर सर्वेश्वर श्रीहरि का भजन-स्मरण करता है वह श्रीभगवद्धाम की प्राप्ति करता है ॥८॥

(९)

पदलिप्सार्थमुत्कण्ठा यस्य चेतसि तिष्ठति ।
तस्य हानिर्भवत्येव तच्च शास्त्रेषु वर्णितम् ॥

जिस मनुष्य की अपने मन में उच्च पद प्राप्ति की इच्छा बनी रहती है उसकी सर्वविध हानि होती है ऐसा शास्त्रों में वर्णन है ॥९॥

(१०)

स्वोपयोगाय गृह्णाति देवस्थानस्य सम्पदम् ।
सोऽज्ञो निरयमाप्नोति विपत्तिं लभतेऽत्र वै ॥

देवस्थान - मन्दिर में जो भी सम्पत्ति है, उसका अपने उपयोग में जो लेगा, ऐसा अज्ञ पुरुष यहाँ पर तो विपत्ति प्राप्त करेगा ही अन्त में उसे नरकगामी होना पड़ेगा ॥१०॥

(११)

शकुनिवच्च दुष्कार्यं व्यवहारं समाचरेत् ।
सोऽपि वै नितरां कष्टमाप्नुयाच्च न संशयः ॥

शकुनि की भाँति दुष्कार्य एवं व्यवहार करेगा वह अनेक

कष्टानुभूति करेगा इसमें किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं है॥११॥

(१२)

वरं मन्ये हरिं नित्यं भजते भक्तिसंयुतम् ।
तं नरं श्रद्धया प्रेम्णा दैन्यभावसुनिष्ठया ॥

जो श्रद्धा, प्रेमाभाव एवं भक्तिपूर्वक दीन होकर सर्वेश्वर
हरि श्रीराधामाधव का भजन आराधन करता है, वह परम श्रेष्ठ
भगवद्भक्त मानव है॥१२॥

(१३)

अकार्ये सततं व्यस्तो मिथ्याभाषी मदान्वितः ।
उभयत्र नरो यश्च महाकष्टमवाप्नुयात् ॥

नहीं करने योग्य कार्य के करने में व्यस्त रहता है और
मिथ्या भाषण करता है तथा अपने मद में ही सदा बना रहता है,
ऐसा मनुष्य इस लोक में तथा परलोक में महाकष्ट पाता है॥१३॥

(१४)

स्वेच्छाचाररतो यो हि वदत्यश्लीलभाषणम् ।
विभ्रान्तो मन्दधीः क्रूरो लभते विपदं सदा ॥

स्वेच्छाचार परायण, अश्लील शब्दों का प्रयोग करने
वाला, मन्दबुद्धि क्रूर स्वभाव का तथा जिसे कर्तव्याकर्तव्य का
बोध नहीं है, ऐसा व्यक्ति सदा विपत्ति को ही प्राप्त होता है॥१४॥

(१५)

विहाय गुरुवाक्यानि स्वयमुपदिशेत् सदा ।
ईदृशोमानवः कष्टं दुस्सहं ध्रुवमाप्नुयात् ॥

अपने श्रीगुरुदेव के तथ्यपूर्ण वचनों को छोड़कर जो स्वयं

उपदेश करने में अपना अहं रखता है, ऐसा मानव बड़े ही कष्ट को प्राप्त होता है ॥१५॥

(१६)

नारीस्वरूपरक्षायै यो मनुजोऽवतिष्ठते ।
स समादरणीयोऽस्तीति सनातनसंस्कृतिः ॥

जो नारी अर्थात् मातृशक्ति स्वरूप की सर्वविध सुरक्षार्थ तत्पर रहता है वह निश्चित रूप से परम आदरणीय है यह अपनी अनादि वैदिक सनातन संस्कृति है ॥१६॥

(१७)

ब्रजवाससमीहाऽस्ति यस्य स्वान्ते च सर्वदा ।
स भाग्यवान्हरेर्दासो लभते युग्मसत्कृपाम् ॥

जिस भगवद्भक्त के मन में सदा ब्रजवास करने की अभिवांछा है वह परम भाग्यवान् श्रीप्रभु के युगलचरणारविन्द का अनन्य दास है अर्थात् सर्वतोभावेन शरणागत है वह निश्चित रूप से श्रीसर्वेश्वर प्रभु का कृपापात्र होता है ॥१७॥

(१८)

हरिभक्तियुतोभक्तो ब्रजवासं समीहते ।
अवधार्य स्वकस्वान्ते राधाकृष्णपदाम्बुजम् ॥

जो श्रीप्रभु की भक्ति से परिपूर्ण है और ब्रजधाम में निवास की भावना करता है तथा वह भक्त अपने हृदय में भगवान् श्रीराधाकृष्ण के श्रीचरणारविन्दों को धारण करके वहाँ अपने आराध्य का भजन स्मरण करता है तो अति सुन्दर है ॥१८॥

(१६)

असक्तः क्लेशयुक्तो वा रुजाक्रान्तश्च भक्तिमान् ।
स सात्विकः सदा स्वान्ते मोदते हरिमिच्छति ॥

जो असमर्थ है और अपने शरीर की विविध व्याधियों से क्लेशयुक्त है तथा साथ ही श्रीहरिभक्ति करता है वह सदा ही अपने चित्त में सात्विकता से समन्वित है एवं श्रीप्रभु की भावना पूर्वक आनन्द का अनुभव करता है ॥१६॥

(२०)

अहो चेखिद्यते चेतो लोका वाञ्छन्ति सम्पदम् ।
विश्वाधारधनं हित्वा सर्वेश्वरप्रभुं प्रियम् ॥

हृदय में बड़ा ही विचार और कष्ट का अनुभव होता है कि यह मानव सम्पत्ति प्राप्ति के लिए व्याकुल रहता है, अपने विश्व-सर्वस्व सम्पत्ति श्रीसर्वेश्वर प्रभु को छोड़कर लौकिक सम्पत्ति की वांछा करता है ॥२०॥

(२१)

अज्ञो विरक्तरूपश्च भोगमिच्छति वैभवम् ।
अतोऽधिकं किमाश्चर्यं प्रभुमाया हि दृश्यते ॥

यह मानव विरक्त हो जाय और फिर जागतिक वैभव तथा विविध भोग की इच्छा करे वस्तुतः यह अज्ञता का ही स्वरूप है एवं इससे बढ़कर क्या आश्चर्य होगा यह उन जगन्नियन्ता श्रीसर्वेश्वर की अघटघटनापटीयसी त्रिगुणात्मिका माया का ही प्रत्यक्ष दर्शन है ॥२१॥

(२२)

कथं चेतसि चिन्ताश्चाऽनिष्टं व्यर्थमभीप्सति ।
सर्वं विहाय श्रीराधा-माधवस्मरणं भवेत् ॥

अपने मन में क्यों चिन्ता करते हैं कि किसी प्रकार के अनिष्ट की सम्भावना हो वस्तुतः व्यर्थ है। इस प्रकार की कल्पना छोड़कर श्रीराधामाधव भगवान् का स्मरण करें ॥२२॥

(२३)

मा भूर्विचलितः साधो! श्रीयुग्माराधनारतः ।
यदि सर्वेश्वरः तुष्टस्तदा व्यर्थं विचारणा ॥

हे श्रेष्ठ पुरुष! वृन्दावनविहारी युगलकिशोर श्रीराधाकृष्ण भगवान् की आराधना में तत्पर रहने वाले को किसी प्रकार विचलित होने की आवश्यकता नहीं है। यदि सर्वज्ञ श्रीसर्वेश्वर प्रभु प्रसन्न हैं तो फिर व्यर्थ में ही क्यों विचार किया जाय ॥२३॥

(२४)

कृपाधाम हरिं नित्यं भजनीयं स्वकान्तरे ।
भवारण्यमहाव्याधि-र्येन नश्यति निश्चितम् ॥

अनन्त कृपाकोष भगवान् सर्वेश्वर श्रीहरि का अपने मानस में भजन ध्यान नित्यप्रति किया जाय जिससे इस भवारण्य की महाव्याधि निश्चितरूप से स्वतः विलीन हो जायेगी ॥२४॥

(२५)

अधीत्य शास्त्रराद्धान्तं कृत्वा सङ्गं महात्मनाम् ।
नैव चलति सन्मार्गे परमाश्चर्यमद्भुतम् ॥

शास्त्रों के उत्तम सिद्धान्त का अध्ययन करके और पुण्यश्लोक सन्त-महात्माओं का सुन्दर सङ्ग करने पर भी यदि सन्मार्ग में न चले तो यह बड़े ही आश्चर्य का प्रसङ्ग है ॥२५॥

(२६)

विहाय नितरां शोकं स्मरणीयः परात्परः ।
सर्वेश्वरः कृपाकोषः सर्वैः साधकसत्तमैः ॥

सभी साधकजनों को चाहिए किसी भी प्रकार का विचार नहीं करके अनन्त कृपाधाम परात्पर श्रीसर्वेश्वर प्रभु का स्मरण करना ही जीवन की सार्थकता है ॥२६॥

(२७)

सेवनीयः सदाचारः सङ्गश्च महतां सताम् ।
आराध्यो राधिकाकृष्णो युगाङ्घ्रिसमुपासकैः ॥

परमाराध्य श्रीराधामाधव भगवान् के उपासक सदाचार का पालन करते हुए एवं उत्तम श्लोक महापुरुषों का सत्सङ्ग करना आवश्यक है ॥२७॥

(२८)

भृङ्गावलीप्रगुञ्जेषु लताकुञ्जेषु शोभितः ।
समाराध्यो रसाधीशो रसाधार उपासकैः ॥

जहाँ भ्रमरों का गुञ्जार हो रहा है ऐसे लता कुञ्जों में सुशोभित रस सर्वस्व रसाधार श्रीसर्वेश्वर भगवान् की आराधना करनी चाहिए ॥२८॥

(२९)

यमुनानीरधारायां किङ्करीनिकरैः सह ।

(२२)

कथं चेतसि चिन्ताश्चाऽनिष्टं व्यर्थमभीप्सति ।
सर्वं विहाय श्रीराधा-माधवस्मरणं भवेत् ॥

अपने मन में क्यों चिन्ता करते हैं कि किसी प्रकार के अनिष्ट की सम्भावना हो वस्तुतः व्यर्थ है। इस प्रकार की कल्पना छोड़कर श्रीराधामाधव भगवान् का स्मरण करें ॥२२॥

(२३)

मा भूर्विचलितः साधो! श्रीयुग्माराधनारतः ।
यदि सर्वेश्वरः तुष्टस्तदा व्यर्थं विचारणा ॥

हे श्रेष्ठ पुरुष! वृन्दावनविहारी युगलकिशोर श्रीराधाकृष्ण भगवान् की आराधना में तत्पर रहने वाले को किसी प्रकार विचलित होने की आवश्यकता नहीं है। यदि सर्वज्ञ श्रीसर्वेश्वर प्रभु प्रसन्न हैं तो फिर व्यर्थ मैं ही क्यों विचार किया जाय ॥२३॥

(२४)

कृपाधाम हरिं नित्यं भजनीयं स्वकान्तरे ।
भवारण्यमहाव्याधि-र्येन नश्यति निश्चितम् ॥

अनन्त कृपाकोष भगवान् सर्वेश्वर श्रीहरि का अपने मानस में भजन ध्यान नित्यप्रति किया जाय जिससे इस भवारण्य की महाव्याधि निश्चितरूप से स्वतः विलीन हो जायेगी ॥२४॥

(२५)

अधीत्य शास्त्रराद्धान्तं कृत्वा सङ्गं महात्मनाम् ।
नैव चलति सन्मार्गे परमाश्चर्यमद्भुतम् ॥

शास्त्रों के उत्तम सिद्धान्त का अध्ययन करके और पुण्यश्लोक सन्त-महात्माओं का सुन्दर सङ्ग करने पर भी यदि सन्मार्ग में न चले तो यह बड़े ही आश्चर्य का प्रसङ्ग है ॥२५॥

(२६)

विहाय नितरां शोकं स्मरणीयः परात्परः ।
सर्वेश्वरः कृपाकोषः सर्वैः साधकसत्तमैः ॥

सभी साधकजनों को चाहिए किसी भी प्रकार का विचार नहीं करके अनन्त कृपाधाम परात्पर श्रीसर्वेश्वर प्रभु का स्मरण करना ही जीवन की सार्थकता है ॥२६॥

(२७)

सेवनीयः सदाचारः सङ्गश्च महतां सताम् ।
आराध्यो राधिकाकृष्णो युगाङ्घ्रिसमुपासकैः ॥

परमाराध्य श्रीराधामाधव भगवान् के उपासक सदाचार का पालन करते हुए एवं उत्तम श्लोक महापुरुषों का सत्सङ्ग करना आवश्यक है ॥२७॥

(२८)

भृङ्गावलीप्रगुञ्जेषु लताकुञ्जेषु शोभितः ।
समाराध्यो रसाधीशो रसाधार उपासकैः ॥

जहाँ भ्रमरों का गुञ्जार हो रहा है ऐसे लता कुञ्जों में सुशोभित रस सर्वस्व रसाधार श्रीसर्वेश्वर भगवान् की आराधना करनी चाहिए ॥२८॥

(२९)

यमुनानीरधारायां किङ्करीनिकरैः सह ।

क्रीडन्तं राधिकाकृष्णं प्रणमामि रसेश्वरम् ॥

श्रीयमुना की कमनीय जलधारा में निकुञ्ज सखि परिकर के साथ प्रिया प्रियतम रसेश्वर श्रीराधाकृष्ण भगवान् जो क्रीडारत हैं उनको सश्रद्ध प्रणाम करते हैं ॥२६॥

(३०)

गङ्गां भागीरथीं पुण्यां प्रातरुत्थाय नित्यशः ।
यो भक्तः प्रणमेद्भक्त्या स वै श्रेयः समश्नुते ॥

जो भगवद् भक्त प्रभात वेला में ऊठकर प्रतिदिन पुण्यतोया भगवती भागीरथी श्रीगङ्गाजी को भक्ति पूर्वक प्रणाम करे वह निश्चय ही परम कल्याण भाजन होता है ॥३०॥

(३१)

वरेण्यं वैष्णवानाञ्च विरक्तद्विजरूपिणाम् ।
श्रीहरिभक्तिलीनानां दर्शनं सुखदं भवेत् ॥

विरक्त हो विप्र हो उसमें भी परम वैष्णव हो तथा श्रीहरि भक्ति परायण हो उनका दर्शन ही सुखद एवं अतीव वरणीय है ॥३१॥

(३२)

प्रत्यहं मन्दिरं गत्वा विधाय प्रभुदर्शनम् ।
प्रणम्य कीर्तनं कृत्वा तुलसीदलमाहरेत् ॥

भावुक भक्त का परम कर्तव्य है प्रतिदिन श्रीहरि मन्दिर में जाकर श्रीराधामाधव प्रभु के मनोहर दर्शन कर तथा श्रीहरि संकीर्तन करके भगवान् की प्रसादी तुलसी पत्र प्राप्त करे ॥३२॥

(३३)

भूतले भारते पुण्ये लब्ध्वा नरजनिं शुभम् ।

नैव योऽज्ञः हरिं ध्यायेत्सदा वै क्लेशमर्हति ॥

भारतवर्ष की परम पवित्र वसुधा पर सुन्दर मानव जन्म प्राप्त करके वह यदि उन सर्वान्तरात्मा श्रीहरि का सदा ध्यान न करे तो ऐसा अज्ञ पुरुष अतीव विपत्ति को प्राप्त करता है ॥३३॥

(३४)

गङ्गोदकसुधारूपं श्रीहरिचरणामृतम् ।
यो नरः श्रद्धया पानं करोति लभते सुखम् ॥

श्रीसर्वेश्वर भगवान् का चरणामृत एवं भगवती भागीरथी श्रीगङ्गाजी का भी अति पवित्र जल अमृतरूप है। जो मानव श्रद्धापूर्वक श्रीहरिणामृत और गङ्गाजल का पान करता है वह परम सुख को प्राप्त होता है ॥३४॥

(३५)

हरिनामानि यो भक्तः संकीर्तयति नित्यशः ।
स शान्तिं ध्रुवमाप्नोति लभते श्रीहरेः कृपाम् ॥

जो अनन्य भक्त प्रतिदिन श्रीहरि संकीर्तन करता है वह निश्चित रूप से परम शान्ति एवं सर्वद्रष्टा श्रीहरि की अहैतुकी कृपा प्राप्त करता है ॥३५॥

(३६)

करोति योऽभिमानश्च स्वेच्छाचारपरायणः ।
स दुस्सहं महाकष्टं लभते पूर्णतः स्वयम् ॥

जो मानव स्वेच्छाचार करता है, अभिमान करता है, वह स्वयं पूर्णरूपेण बड़े कष्ट को प्राप्त करता है ॥३६॥

(३७)

धर्मं विहाय यो मत्तः पापकृत्यपरायणः ।
चलति विपरीतञ्च स वै निरयभागभवेत् ॥

अनादि वैदिक सनातन वैष्णव धर्म को छोड़कर जो प्रमत्त पापचार करने वाला मानव शास्त्र विपरीत आचरण करता है वह निश्चयपूर्वक नरकगामी होता है ॥३७॥

(३८)

दैन्यमीप्सति सर्वात्मा श्रीराधामाधवप्रभुः ।
यतो हि दैन्यमाश्रित्य भजनीयो हरिर्जनैः ॥

सर्वात्मा सर्वद्रष्टा श्रीराधामाधव भगवान् दीनभाव को चाहते हैं अतएव दैन्ययुक्त होकर उन श्रीहरि का भजन, स्मरण, कीर्तन करना चाहिए ॥३८॥

(३९)

केचिद्वाञ्छन्ति वित्तञ्च केचित्पुत्रादिबान्धवान् ।
अनन्यरसिका भक्ता वाञ्छन्ति श्रीहरिं परम् ॥

कितने ही व्यक्ति जागतिक धन वैभव की इच्छा करते हैं और कितने ही व्यक्ति पुत्रादि बान्धव जनों की स्पृहा करते हैं किन्तु भगवत्परायण अनन्य रसिक भक्त परात्पर सर्वेश्वर श्रीहरि की अभिलाषा करते हैं ॥३९॥

(४०)

अर्थलिप्सां परित्यज्य पदलोलुपदां हृदा ।
सर्वं हित्वा च गोविन्दं नितरां हृदि संस्मरेत् ॥

सांसारिक धन-द्रव्य की इच्छा को तथा विशिष्ट पद प्राप्ति

की अपने अन्तःकरण से सबको छोड़कर सर्वेश्वर गोविन्द श्रीहरि का अपने चित्त में सर्वतोभावेन स्मरण करें यही परम सार है ॥४०॥

(४१)

प्राणीमात्रसुरक्षार्थं देशस्य रक्षणाय च ।
सन्नद्धो यो नरोधीमान् स सदा सुखमश्नुते ॥

प्राणीमात्र की रक्षा के लिए तथा अपने देश की रक्षा के लिए जो बुद्धिमान पुरुष तत्पर रहे वह सदा आनन्द का अनुभव करता है ॥४१॥

(४२)

तीर्थयात्रापरोयश्च साधुसेवापरायणः ।
हरिकथासुधापाने निरतोऽस्ति स वैष्णवः ॥

जो तीर्थ यात्रा करता हो तथा सन्त-महात्माओं की सेवा में तत्पर रहता हो एवं भगवत्कथा सुधा रस पान करता हो वह यथार्थ में परम वैष्णव है ॥४२॥

(४३)

गोपीचन्दनसंलिप्तसुन्दरभालभूषितः ।
तुलसीमालया युक्तो यः स वैष्णवसत्तमः ॥

जिसके कमनीय ललाट पर भगवत्स्वरूप ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक सुशोभित है तथा जिसके कण्ठ प्रदेश में तुलसी कण्ठी धारण की हुई है वह उत्तम वैष्णव है ॥४३॥

(४४)

शंख-चक्राङ्कितो यो हि मन्त्रराजजपे रतः ।
सात्त्विको वेदतत्त्वज्ञः स वैष्णवोत्तमो नरः ॥

शंख-चक्र से अङ्कित जिसके दोनों भुजायें हैं और श्रीगोपाल मन्त्रराज के जप में निरत तथा सात्त्विक वृत्ति का हो और वेदों का जिसे परिज्ञान हो वह भक्त वैष्णवों में श्रेष्ठ समझा जायेगा ॥४४॥

(४५)

अरण्यवासिनः सन्तो लोकहितैकजीवनाः ।
प्रभोराराधने दक्षाः सन्ति ते वैष्णवोत्तमाः ॥

वन प्रदेश में निवास करने वाले, प्राणिमात्र के हितार्थ ही जिनका जीवन है तथा नित्यनिकुञ्जविहारी श्रीराधाकृष्ण भगवान् की आराधना में परम प्रवीण वे वैष्णवों में अतीव श्रेष्ठतम है ॥४५॥

(४६)

गवां हिताय ये लोकाः सेवारताश्च सर्वदा ।
एतेषां महिमा लोके गीयते नितरां जनैः ॥

गो माता के हितार्थ उनकी सेवा में सदा अभिरत रहते हैं ऐसे उत्तम पुरुषों की महिमा का परिवर्णन इस जगत् में अनेक श्रेष्ठजनों द्वारा किया जाता है ॥४६॥

(४७)

शास्त्राण्यधीत्य यो धीरो न भजेन्माधवं यदि ।
एवंविधस्य धीरस्य वृथैव पठने श्रमः ॥

विविध शास्त्रों का अध्ययन करके जो विद्वान् पुरुष यदि श्रीराधामाधव भगवान् का भजन न करे ऐसे विद्वान् का पठन-पाठन में व्यर्थ ही श्रम किया जाता है ॥४७॥

(४८)

एकादशीव्रते निष्ठा यस्य वृन्दार्चने तथा ।
गोसेवानिरतं चित्तं स साधुः परमोत्तमः ॥

निष्ठापूर्वक जो एकादशी व्रत करता है और तुलसीजी की सर्वतोभावेन सेवा करता है तथा गोसेवा में भी जिसका मन लगा हुआ है ऐसा सन्त अत्यन्त उत्तम है ॥४८॥

(४९)

सदाऽनिवार्यरूपेण निगमाध्ययनं परम् ।
वेदज्ञैर्विप्रवर्यैश्च विधातव्यञ्च पूर्णतः ॥

वेदज्ञ विप्रजनों का यह सर्वविध परम कर्तव्य है कि सदा सर्वदा अनिवार्य रूप से वेदादि शास्त्रों का अध्ययन अनुशीलन करें ॥४९॥

(५०)

स्वच्छन्दता सदा हेया साधकैर्भक्तभावुकैः ।
धारणीयो निजस्वान्ते स्वाराध्यो हरिरीश्वरः ॥

साधक भावुक भक्तों को चाहिए कि स्वच्छन्दता को सदा छोड़ें और अपने अन्तर्मानस में सर्वाराध्य श्रीसर्वेश्वर श्रीहरि को धारण करें ॥५०॥

(५१)

स्वकीये जीवने शान्तिस्तदा भवति पूर्णतः ।
हरिभक्ति र्यदा चित्ते राधामाधवकीर्तनम् ॥

अपने जीवन में पूर्णरूप से शान्ति तब होती है जब अपने अन्तःकरण में श्रीहरिभक्ति तथा श्रीराधामाधव भगवान् की मधुर

नाम संकीर्तन की धारा प्रवाहित होगी ॥५१॥

(५२)

यो हि चलति सन्मार्गे स्वाध्यायशील उत्तमः ।
स वै शान्तिमवाप्नोति राधाकृष्णाऽङ्घ्रिभावुकः ॥

जो उत्तम मार्ग का अनुसरण करता है तथा वेद-पुराणादि शास्त्रों का अनुशीलन करता है, तथा श्रीराधाकृष्ण भगवान् के श्रीचरणारविन्दों में अनन्य भावना रखता है, वह उत्तम पुरुष है और समग्र रूप से शान्ति प्राप्त करता है ॥५२॥

(५३)

चिन्तातुरः कथं व्यर्थं शोचति शोकमोहितः ।
हरिशरणमागच्छेत् समाधानं भविष्यति ॥

क्यों व्यर्थ में ही चिन्ता करते हैं और इसी प्रकार किसी प्रकार का शोक करना भी असङ्गत है, सर्वेश्वर श्रीहरि के शरणागत हो जाय तो सभी प्रकार समाधान स्वतः हो जायेगा ॥५३॥

(५४)

विचार्य पूर्णतः सम्यक्कार्यसम्पादनं यदि ।
तदा भवेन्न चाऽऽपत्तिः समाधानं सुनिश्चितम् ॥

यदि सभी प्रकार विचार करके किसी शुभकार्य का प्रारम्भ किया जाय तो किसी भी रूप का कोई संकट नहीं आयेगा और उसका समाधान स्वतः हो जायेगा ॥५४॥

(५५)

शास्त्रज्ञानं श्रुतीनाञ्चाऽऽचरणीयं स्वकर्मणि ।
साधकैश्छात्रवृन्दैश्च सद्भिः श्रेष्ठसुधीजनैः ॥

अपने किये जाने वाले कार्यों में श्रुति-स्मृति-पुराणादि शास्त्रों का परिज्ञान किया जाना चाहिए साधकजनों, छात्रों और श्रेष्ठ विद्वानों, सन्तों द्वारा ॥५५॥

(५६)

राधाकृष्णपराभक्ति - रतोऽपास्तपरिग्रहः ।
वृन्दावनरसाम्भोधिसारं लब्धा सुखी भवेत् ॥

जो परिग्रह अर्थात् किसी भी प्रकार की याचना नहीं करता है तथा श्रीराधाकृष्ण भगवान् की अनन्य पराभक्ति में तल्लीन है और श्रीवृन्दावन-नवनिकुञ्ज रससिन्धु का सार रूप को ग्रहण करके अतीव आनन्द का अनुभव करता है ॥५६॥

(५७)

सारल्यभावमाश्रित्य ह्यार्तचर्या करोति यः ।
एतज्जीवनसाफल्यं सर्वेश्वरः प्रसीदति ॥

सरलभाव से रहकर जो दुःखीजनों की सेवा करता है ऐसे व्यक्ति का जीवन परम सार्थक है और एवंविध मानव पर श्रीसर्वेश्वर प्रभु अवश्य प्रसन्न होते हैं ॥५७॥

(५८)

शास्त्रविधिसदाचारः पालनीयो यथाबलम् ।
तदैव जीवने शान्तिराविर्भवति सुदृढम् ॥

शास्त्रविधि के अनुसार जो सदाचार वर्णित हुआ है उसका यथाशक्ति पालन करना चाहिए जिससे अपने जीवन में परम शान्ति प्राप्त होगी ॥५८॥

(५६)

अज्ञा जनाश्च शोचन्ति बाधां कर्तुमनारतम् ।
अतस्तेषां कुसङ्गं हि संत्यज्य श्रीहरिं भजेत् ॥

जो अज्ञ अविवेकीजन है वे निरन्तर अन्य जनों के लिए बाधा ही उपस्थित करते रहते हैं अतएव ऐसे व्यक्तियों का कुसङ्ग छोड़कर सर्वाराध्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु का भजन चिन्तन करना ही हितकर है ॥५६॥

(६०)

पूर्व विविच्य शास्त्रेषु कर्तव्यो ज्ञानसंगहः ।
स नैव क्लेशमाप्नोतीत्याप्तवाणी शुभास्पदा ॥

प्रथम सभी प्रकार से शास्त्र वर्णित प्रसङ्ग शोच कर फिर भलि प्रकार ज्ञान का अनुभव किया जाना चाहिए वह किसी प्रकार के कष्ट को प्राप्त नहीं होगा, यह परम कल्याणकारी वाणी महापुरुषों की है ॥६०॥

(६१)

नित्यं जयोऽस्तु धर्मस्य श्रौतसनातनस्य वै ।
लोके सर्वत्र धर्मस्याऽस्य जयोऽस्तु मुहुर्मुहुः ॥

अनादि वैदिक सनातन धर्म की सदा जय हो पुनश्च इस जगत् में सर्वत्र धर्म की जय हो और वह भी पुनः पुनः ॥६१॥

(६२)

गोपालमन्त्रराजस्य जापं करोति वैष्णवः ।
निष्ठया श्रद्धया पूर्णं लभते मुक्तिमुत्तमाम् ॥

अतीव निष्ठा तथा श्रद्धा पूर्वक जो वैष्णव श्रीगोपाल

मन्त्रराज का जाप करता है वह सर्वविध रूप से श्रीभगवद्वापत्ति रूप मोक्ष को प्राप्त होता है ॥६२॥

(६३)

यस्य गेहे गुरोरर्चा राधाकृष्णाङ्घ्रिपूजनम् ।
तद्गृहं मन्दिरञ्चाऽस्ति वसन्ति तत्र निर्जराः ॥

जिस भक्त के घर में श्रीराधाकृष्ण भगवान् के युगलचरणारविन्दों का पूजन होता हो तथा अपने श्रीगुरुदेव की अर्चना की जाती हो वह घर मन्दिर के रूप में है और वहाँ पर देववृन्द निवास करते हैं ॥६३॥

(६४)

विविच्य कार्यजातञ्चाऽवश्यकं निखिलं धिया ।
ततो हि सुविधातव्यं येन बाधा न जायते ॥

आवश्यक समस्त कार्य बुद्धि से सोचकर करना चाहिए जिससे किसी प्रकार के विघ्न बाधाओं की सम्भावना न हो ॥६४॥

(६५)

ईदृशमस्तु कार्यं हि सर्वेषां हितकारकम् ।
तदाचरणसन्तुष्टा भवेयुर्भूरिदा जनाः ॥

कार्य ऐसा होना चाहिए जो सभी के लिए हितप्रद हो ऐसे व्यक्ति के द्वारा किये जाने वाले कार्य से सभी श्रेष्ठ महानुभाव परम सन्तुष्ट हो जाँय।

(६६)

अबलारक्षणे दक्षा भवेयुर्देशवासिनः ।
तत्रोपेक्षा न कर्तव्येति शास्त्रीयपरम्परा ॥

समस्त देशवासियों को चाहिए कि माताओं की सर्वविध सुरक्षा में कुशल हों कभी भी इनकी उपेक्षा न करें, यह शास्त्रों का निर्देश है ॥६६॥

(६७)

पूर्व हिताहितं बुध्वा ततः कार्यं समाचरेत् ।
इमानि नीतिवाक्यानि धारणीयानि चेतसि ॥

प्रथम हित अहित को समझ कर उसके पश्चात् कार्य का शुभारम्भ करें, ये नीति के वचन हृदय में अवधारणीय है ॥६७॥

(६८)

पूर्व ध्यात्वा हरिं स्वान्ते नत्वा गुरुञ्च निष्ठया ।
यात्रादिश्रेष्ठकार्यञ्च ततः परं विधीयताम् ॥

पहले सर्वेश्वर श्रीहरि का हृदय में ध्यान करके और निष्ठापूर्वक श्रीगुरुदेव को प्रणाम करके यात्रादि उत्तम कार्यों को करे ॥६८॥

(६९)

विनम्रभावं सन्धार्य ब्रजेदाचार्यसन्निधौ ।
प्रणम्य विधिवच्चारु ततो हार्दनिवेदनम् ॥

अपने सद्गुरु के निकट विनम्र भाव से जावे और विधिवत् भली प्रकार से प्रणाम करके उसके अनन्तर अपना निवेदन प्रस्तुत करे ॥६९॥

(७०)

माधुर्यं वचने धार्य कटुतां सर्वदा त्यजेत् ।
सद्-व्यवहार आचारः श्रेष्ठसाधकलक्षणम् ॥

अपनी वाणी में मधुरता हो, कटुतापूर्ण वचनों का सर्वदा त्याग करे तथा सद्-व्यवहार सदाचार का पालन करना उत्तम साधक का लक्षण है ॥७०॥

(७१)

ब्रह्मचर्यव्रती धीरः प्राणायामपरायणः ।
शास्त्रीयविधिसन्मार्गे रतो योऽस्तीह धन्यभाक् ॥

ब्रह्मचर्य का धारण करने वाला एवं प्राणायाम का पालनकर्ता श्रेष्ठ पुरुष शास्त्रीय विधि पूर्वक समुचित मार्ग में चले वह परम धन्यवादार्ह है ॥७१॥

(७२)

शास्त्रधर्मोपदेष्टा च ब्रह्मनिष्ठो गुरुर्महान् ।
राधाकृष्णपराभक्तिनिरतो वर्तते सुधीः ॥

श्रीराधाकृष्ण भगवान् की भक्ति में लीन ब्रह्मनिष्ठ शास्त्रों का उपदेश करने वाले सद्गुरुदेव परम श्रेष्ठ होते हैं वे उत्तम महापुरुष हैं ॥७२॥

(७३)

प्रतिग्रहं न गृह्णाति नेप्सति भवकामनाम् ।
केवलं वाञ्छतीशं यः स वै भक्तेषु भास्करः ॥

जो किसी भी प्रकार की चाहना नहीं करता है और सांसारिक कामनाओं की भी इच्छा नहीं करता है और केवल श्रीसर्वेश्वर प्रभु की ही अभिलाषा करता है वह भक्तों में भास्कर अर्थात् तेजस्वी है ॥७३॥

(७४)

विहाय स्वीयकार्यञ्च लौकिकं सकलं हृदा ।
सर्वेश्वराश्रयं याति स मान्यो गौरवास्पदः ॥

अपने इहलौकिक समस्त कार्यों को अपने अन्तर्मानस से छोड़कर श्रीसर्वेश्वर प्रभु का आश्रय लेता है वह व्यक्ति परम सन्मान्य एवं गौरवास्पद है ॥७४॥

(७५)

स्वजनान्बान्धवान्हित्वा सदा भजति यो हरिम् ।
मुमुक्षुः सुभगो लोके वरणीयः सुपावनः ॥

अपने स्वजन एवं बान्धवों को छोड़कर सदा श्रीसर्वेश्वर भगवान् का भजन करता है वह मोक्ष को चाहने वाला अतिश्रेष्ठ इस भूतल पर परम वरेण्य एवं पावन रूप है ॥७५॥

(७६)

अनारतञ्च गोविन्दं गुरुवर्यं सुसेवते ।
प्राप्य वृन्दावनं धाम स भक्तः सुखमश्नुते ॥

अपने आराध्य श्रीगोविन्द भगवान् की तथा श्रीगुरुवर्य की सतत सेवा परायण रहते श्रीधामवृन्दावन में निवास निरत जो भक्त है वह परमानन्द को प्राप्त होता है ॥७६॥

(७७)

प्राणीमात्रेषु गोविन्दं भक्तिभावेन पश्यति ।
यो भक्तः सात्विकः स्वान्ते स प्राप्नोति हरेः कृपाम् ॥

समस्त प्राणीमात्र में भगवद् बुद्धि रखता है ऐसा सात्विक

भावुक भक्त अपने चित्त में श्रीसर्वेश्वर प्रभु कृपा का अनुभव करता है ॥७७॥

(७८)

कथं चिन्तातुरोजातो यत्र वृन्दावने स्थितः ।
राधाकृष्णकृपा दिव्या नित्यं वर्षति सुन्दरम् ॥

जहाँ पर भगवान् श्रीराधाकृष्ण की अतीव सुन्दर दिव्य कृपावृष्टि निरन्तर होती है ऐसे श्रीधाम वृन्दावन में निवास करने वाले को किसी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता ही नहीं है ॥७८॥

(७९)

नानाविधविपत्तिर्या यस्याऽऽयाति हि जीवने ।
श्रीहरिस्मरणाच्चाशु नश्यति साधकस्य सा ।

जिस साधक के जीवन में नाना प्रकार की विपत्तियाँ आती हैं, अपने आराध्य श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु के स्मरणमात्र से सब का विलय हो जाता है ॥७९॥

(८०)

वरं मन्ये ब्रजावासो वरं गिरीशदर्शनम् ।
वरं सर्वेश्वरस्याङ्घ्रिपूजनं हितकारकम् ॥

ब्रजधाम का निवास ही परम श्रेष्ठ है उसमें भी गिरिराज श्रीगोवर्धन का दर्शन तथा श्रीसर्वेश्वर भगवान् की अर्चना और भी परमानन्दकर है ॥८०॥

(८१)

पठन्ति सुधियः शास्त्रं सन्तः सर्वेश्वरं प्रभुम् ।

स्मरन्ति कीर्तयन्तस्ते विनम्राः सात्विकाः शुभाः ॥

विद्वज्जन शास्त्रों का पठन करते हैं और सन्त-महात्मा अति विनम्र भाव सात्विक रूप से कीर्तन करते हुए श्रीसर्वेश्वर प्रभु का स्मरण करते हैं ॥८१॥

(८२)

प्राणिनः केन जीवन्ति कथं तिष्ठन्ति भूरिशः ।
जिज्ञासेयं स्वतश्चित्ते समाधानं श्रुतेर्वचः ॥

प्राणीमात्र का जीवन किसके द्वारा चलता है और कैसे वे अपने जीवन को रखे हुए हैं, अपने मन में इस प्रकार की जिज्ञासा होती है जिसका समाधान श्रुति वचन है ॥८२॥

(८३)

आलस्यं पूर्णतस्त्यक्त्वा भजते भक्तिमान्नरः ।
श्रीराधामाधवं भक्त्या सोऽयश्च लभते सुखम् ॥

आलस्य को पूर्णरूप से छोड़कर भक्तिमान् पुरुष श्रीराधामाधव भगवान् का भक्तिपूर्वक भजन करता है वह परमानन्द को प्राप्त होता है ॥८३॥

(८४)

यस्मिञ्चा साधुता शुद्धा पूर्णा लोकहितावहा ।
भगवद्भावमापन्नाः तादृशाः साधवो वराः ॥

जिनमें जन कल्याणकारी पूर्णरूपेण शुद्ध साधुता है तथा जो श्रीभगवच्चरणानुरागी हैं ऐसे सन्त-महात्मा परम श्रेष्ठ हैं ॥८४॥

(८५)

परमं जीवनं यस्य नरस्य मङ्गलात्मकम् ।

हरेराराधने लग्नं नितरामस्ति मञ्जुलम् ॥

जिस मानव का जीवन परम मङ्गलरूप है और अपने सर्वस्वधन श्रीसर्वेश्वर प्रभु में सर्वतोभावेन लगा हुआ है वस्तुतः वह अति पवित्र है ॥८५॥

(८६)

विरक्तो वैष्णवो विप्रः सर्वेश्वराऽङ्घ्रिचिन्तकः ।
गीतादिशास्त्रवेत्ता च मोदते भुवि सर्वदा ॥

जो विप्र (ब्राह्मण) विरक्त और वैष्णव है तथा श्रीसर्वेश्वर प्रभु के चरणारविन्दों का चिन्तन करता है और श्रीमद्भगवद्-गीता आदि शास्त्रों का जानकार है वह इस जगत् में सदा आनन्द को प्राप्त करता है ॥८६॥

(८७)

मन्त्रहीनो नरो यश्चाऽदीक्षितो शास्त्रवञ्चितः ।
नैवाऽस्ति सद्गतिस्तस्य नेह स सुखमश्नुते ॥

जिस मनुष्य ने सद्गुरु से मन्त्रदीक्षा ग्रहण न की हो और अदीक्षित रहा हो जिसे शास्त्र का भी ज्ञान न हो ऐसे व्यक्ति की न तो सद्गति ही होती है और न इस जगत् में सुख ही प्राप्त करता है ॥८७॥

(८८)

राधामाधवयुग्माङ्घ्रिमञ्जुपङ्कजसेवने ।
यस्य भक्तस्य निष्ठाऽस्ति हृदि सुखं च लभ्यते ॥

श्रीराधामाधव भगवान् के अतिसुन्दर चरण कमलों की सेवा में जिस भक्त की अतीव निष्ठा है वह अपने हृदय में परम

सुखी रहता है ॥८८॥

(८९)

गोविन्दाऽऽराधनेशीलो भक्तिभावसमन्वितः ।
सदा सौभाग्यशाली स सुखमक्षयमश्नुते ॥

भगवान् श्रीगोविन्द की आराधना में तत्पर हो और उसे भी भक्तिभाव से सदा करता हो वह अक्षय सुख को प्राप्त करता है ॥८९॥

(९०)

दृष्ट्वा चेच्छिद्यते चेतो लोका विरुद्धकर्मणि ।
सर्वदा तत्पराः सन्ति तेषां श्रेयः कथं शुभम् ॥

देखकर हृदय में बड़ी वेदना होती है कि मानव सदा विपरीत कार्यों को करते हैं ऐसे व्यक्तियों का मङ्गलमय कल्याण कैसे होगा ॥९०॥

(९१)

गुरुदीक्षां समादाय मन्त्रं जपति यो नरः ।
राधाकृष्णपदाम्भोजं स्मृत्वा स शान्तिमाप्नुयात् ॥

सद्गुरुदेव से मन्त्रदीक्षा प्राप्त करके जो व्यक्ति मन्त्र का जप करता है और अपने परमाराध्य भगवान् श्रीराधाकृष्ण के चरणकमलों का स्मरण करके शान्ति को प्राप्त करता है ॥९१॥

(९२)

आनन्दं लभते यो हि हरिभक्तिपरायणः ।
गुरोराज्ञां शिरोधार्यं सद्विप्रो वैष्णवो भुवि ॥

इस जगत् में श्रीगुरुदेव की श्रेयस्कर आज्ञा को धारण

करके जो श्रीप्रभु भक्ति परायण श्रेष्ठ ब्राह्मण है और परम वैष्णव है वह महानन्द को प्राप्त करता है ॥६२॥

(६३)

कृत्वाऽर्थोपार्जनं यश्च भक्तः श्रेष्ठतमोत्तमः ।
तद्विनियोग इष्टार्थं करोति मोदते हरिः ॥

जो भक्त धन का संग्रह करके अपने आराध्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा में उसको लगाता है वह श्रेष्ठ भक्तों में परम उत्तम है और इससे वे श्रीहरि अत्यन्त प्रसन्न होते हैं ॥६३॥

(६४)

सद्गुरोर्वचनानीह समाकर्ण्य पुनः पुनः ।
स्वमानसे सदा यो हि चिन्तयति शुभो जनः ॥

सद्गुरुदेव के उपदेश को सुनकर बार-बार अपने मन में जो चिन्तन करता है ऐसा व्यक्ति बड़ा ही श्रेष्ठ है ॥६४॥

(६५)

हरेराराधना कार्या सततं शास्त्रकोविदैः ।
सर्वेश्वरकृपापात्रा भविष्यन्ति विनिश्चितम् ॥

शास्त्रों के परिज्ञाता विद्वज्जनों द्वारा निर्दिष्ट निरन्तर श्रीहरि की आराधना की जानी चाहिए जिससे वे श्रीसर्वेश्वर प्रभु के निश्चित रूप से परम कृपापात्र बन जाय ॥६५॥

(६६)

वेदान्तशास्त्रवाक्यानि चित्तेऽवधार्य नित्यशः ।
राधाकृष्णपदध्याने रता भवन्तु भूरिशः ॥

वेदान्त शास्त्र के दिव्य वचनों को प्रतिदिन अपने

अन्तःकरण में धारण करके सर्वतोभावेन श्रीराधाकृष्ण भगवान् के युगल पदाम्बुजों में अभिरत होना चाहिए॥६६॥

(६७)

अबाधगतिरूपेण कालो याति निरन्तरम् ।
अतो हि भगवद्भक्ति-निरताः सन्तु भावुकाः ॥

यह कालचक्र अनवरत अबाधगति से चल रहा है इसलिए भावुकजनों को श्रीभगवद्भक्ति में अभिरत रहना परम अपेक्षित है॥६७॥

(६८)

इदञ्च कालचक्रं हि भ्रमति सन्मुखे सदा ।
तस्माच्च श्रीप्रभो ध्यानं करणीयं सुधीजनैः ॥

यह विचित्र कालचक्र (समय-चक्र) अपने सन्मुख परिभ्रमण करता ही रहता है अतएव विद्वज्जनों द्वारा उपदिष्ट श्रीसर्वेश्वर प्रभु का ध्यान किया जाना चाहिए॥६८॥

(६९)

हरिसंकीर्तनं नित्यं कुर्वन्ति ये च तन्मयाः ।
ते ध्रुवं भगवल्लोकं लभन्ते नाऽत्र संशयः ॥

जो भक्त तन्मय होकर प्रतिदिन श्रीहरि संकीर्तन करते हैं वे निश्चित रूप से श्रीभगवद्धाम की प्राप्ति करते हैं इसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं है॥६९॥

(१००)

व्यर्थवार्ता प्रकुर्वन्ति ये जनाश्च निरन्तरम् ।
इतस्ततो भ्रमन्तीह तेषां श्रेयः कथं भवेत् ॥

जो मानव निरन्तर निरर्थक बातें करते रहते हैं और इधर-उधर घूमते रहते हैं उनका हित कैसे होगा ॥१००॥

(१०१)

पशु-पक्षि हितार्थं आऽम्बुशुद्धान्नादिकं सदा ।
सश्रद्धं प्रददातीह यो नरः सुखमाप्नुयात् ॥

पशु-पक्षियों के हित के लिए उनको श्रद्धापूर्वक अन्न-जल-फलादिक जो देता रहता है वह मनुष्य अवश्य ही सुखी रहता है ॥१०१॥

(१०२)

पादपोच्छेदनं नैव विदध्याद् ध्यानपूर्वकम् ।
तेषाञ्च रक्षणं चारु शोभनमतिशोभनम् ॥

व्यर्थ में ही वृक्षों को न काटे, इसका पूरा ध्यान रखें उनकी सर्वतोभावेन अच्छी प्रकार से रक्षा करें यह कार्य अतीव सुन्दरातिसुन्दर है ॥१०२॥

(१०३)

“प्रेरणाशतकं” ध्येयं सर्वमङ्गलदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

सभी के लिए मङ्गलकारी अध्ययन करने योग्य यह “प्रेरणाशतक” श्रीसर्वेश्वर कृपाप्रसाद स्वरूप रचना की गई ॥१०३॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री “श्रीजी” महाराज

द्वारा विरचित-

*

ग्रन्थमाला

*

प्रकाशित श्लोक सं.

१. श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातःस्तवराज पर
(युगमतत्त्व प्रकाशिका) नामक संस्कृत व्याख्या ,,
२. श्रीयुगलगीतिशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ११८
३. उपदेश - दर्शन (हिन्दी-गद्यात्मक) ,,
४. श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु (पद सं. १३२) ,,
५. श्रीस्तवराजजलिः (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ३६५
६. श्रीराधामाधवशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १०५
७. श्रीनिकुञ्ज-सौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ५८
८. हिन्दु-संघटन (हिन्दी-गद्यात्मक) ,,
९. भारत-भारती-वैभवम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १३७
१०. श्रीयुगलस्तवविंशतिः (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १८६
११. श्रीजानकीवल्लभस्तवः (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ४०
१२. श्रीहनुमन्महिमाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, २२
१३. श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम्
(संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १५

१४. भारत कल्पतरु (पद सं० ६६, दोहा सं० १६०) ,,
१५. श्रीनिम्बार्कस्तुवार्चनम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ६५
१६. विवेक-वल्ली (पद सं० ४१६) ,,
१७. नवनीतसुधा (संस्कृत-गद्यात्मक) ,,
१८. श्रीसर्वेश्वरशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १०८
१९. श्रीराधाशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १०३
२०. श्रीनिम्बार्कचरितम् (संस्कृत-गद्यात्मक) ,,
२१. श्रीवृन्दावनसौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ६०
२२. श्रीराधासर्वेश्वरमंजरी ,,
(पद सं० ६४-दोहा सं० ६२)
२३. श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम् ,, १०
(संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (पद सं० २०)
२४. छात्र-विवेक-दर्शन (हिन्दी दोहा-पद्यात्मक) ,,
(दोहा सं० २४१)
२५. भारत-वीर-गौरव (हिन्दी-पद्यात्मक दोहा सं० १८१) ,,
२६. श्रीराधासर्वेश्वरालोकः (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,,
(दोहा सं० ३२)
२७. परशुराम-स्तवावली (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,, १७
(दोहा सं० ४६, पद सं० ६)
२८. श्रीराधा-राधना (संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) ,, ५६
(पद सं० २८, दोहा सं० ५१)
२९. मन्त्रराजभावार्थ-दीपिका (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, १८
३०. आचार्यपञ्चायतनस्तवनम् (संस्कृत-पद्यात्मक) ,, ३५

३१. श्रीराधामाधवसविलास, महाकाव्य	,,	
(दोहा सं० १०५३)		
३२. गोशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१३५
(दोहा सं० ६३, पद सं० १४)		
३३. श्रीसीतारामस्तवादार्शः	,,	८०
(संस्कृत-हिन्दी-पद्यात्मक) (दोहा सं. १०१, पद सं. १६)		
३४. स्तवमल्लिका (संस्कृत पद्यात्मक)	,,	२१३
(दोहा सं० ४२)		
३५. श्रीरामस्तवावली (संस्कृत -पद्यात्मक)	,,	५६
(दोहा सं० २१)		
३६. श्रीमाधवशरणापत्तिस्तोत्रम्	,,	१०३
३७. प्रेरणाशतक (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०३

कुल हिन्दी पद सं० २७८२

कुल श्लोक सं० २२४४

(१)

प्रेरणाशतक सुपथ है, अनुशीलन हर बार।
मिलहि प्रेरणा अतिप्रिय, “शरण” सुभग संचार॥

(२)

जो जन वांछित शान्ति-सुख, सर्वेश्वर हिय धार।
प्रेरणाशतक ग्रन्थ की, सरणी “शरण” विचार॥

(३)

सुधी छात्रजन पठत ही, पावत श्रेष्ठ विचार।
प्रेरणाशतक कहत यह, “शरण” शास्त्र का सार॥

(४)

सम्प्रति समग्र विश्व में, अति अशान्ति साम्राज्य।
भगवद्गीता पाठ हो, “शरण” मिलहि सुख राज्य॥

(५)

प्रतिपल दुर्लभ समय गति, धावत अतिशय आशु ।
राधामाधव स्मरण हो, “शरण” शान्ति अति पाशु ॥

(६)

श्रौत--सनातन धर्म को, वैष्णवता हिय धार।
जीवन सुखमय सुनिश्चय, “शरण” युगल संचार॥

(७)

श्रुति-सूत्रादिपुराण से, पावो ज्ञान अपार।
तभी सार्थक जीवन है, “शरण” यही चित धार॥



अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधा-सर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज का जन्म विक्रम संवत् 1986 वैशाख शुक्ल 1 शुक्रवार तदनुसार दिनांक 10 मई, 1929 को निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) में हुआ। अपकी माताश्री का नाम स्वर्णलता (सोनीबाई) एवं पिताश्री का नाम श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ इन्दोरिया था। आप जैसे नक्षत्रधारी महापुरुष के जन्म से यह

विप्र वंश धन्य हुआ है। आपश्री 11 वर्ष की अल्पावस्था में वि.सं. 1997 आषाढ शुक्ल 2 रविवार (रथयात्रा) के शुभावसर पर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज से वैष्णवी दीक्षा से दीक्षित होकर पीठ के उत्तराधिकारी नियुक्त हुए। वि.सं. 2000 में पूज्य गुरुदेव के गोलोकवास होने पर 14 वर्ष की अवस्था में ज्येष्ठ शुक्ल 2 शनिवार दिनांक 5 जून 1943 को आचार्यपीठ पर आसीन हुए। तदनन्तर 4 वर्ष तक श्रीधाम वृन्दावन में न्याय-व्याकरण-वेदान्त आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। वज्रविदेही चतुःसम्प्रदाय श्रीमहन्त श्री धनञ्जयदासजी काठिया बाबा महाराज तर्क-तर्कतीर्थ जैसे महानुभावों का आपको संरक्षण प्राप्त हुआ। आपश्री के आचार्यत्वकाल में वैष्णव चतुःसम्प्रदायों के आचार्यों, श्रीमहन्तों, सन्त महात्माओं, समस्त शंकराचार्यों श्रीकरपात्रीजी महाराज, महामण्डलेश्वरों, देश के मूर्धन्य मनीषियों, राजा-महाराजाओं, राजनेताओं के साथ निकटतम घनिष्ठ सम्पर्क बढ़ा। श्री निम्बार्क सम्प्रदाय का चतुर्दिक् विस्तार हुआ। वि.सं. 2001 में आपश्री ने 15 वर्ष की अवस्था में कुरुक्षेत्र के विराट् साधु सम्मेलन में जगद्गुरु पुरीपीठाधीश्वर श्रीभारतीकृष्णतीर्थजी महाराज के तत्त्वावधान में अध्यक्ष पद को अलंकृत किया।

आपश्री के कार्यकाल में तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा सम्पन्न हुई। प्रयाग, हरिद्वार (वृन्दावन), उज्जैन, नासिक इन चारों स्थानों के कुम्भ पर्वों पर अनेकशः श्रीनिम्बार्कनगर में समायोजित धार्मिक अनुष्ठानों, धर्माचार्यों के सदुपदेशों, विविध सम्मेलनों द्वारा समग्र जन समुदाय को सन्मार्ग की ओर प्रेरित किया जाता है। इसी प्रकार सं. 2026 में वज्रयात्रा, 2031 में विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2047 में श्रीमुरारी बापू की रामकथा, 2050 में स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर अ.भा. विराट् सनातन धर्म सम्मेलन, 2061 में श्री भगवन्निम्बार्काचार्य 5100वां जयन्ती महोत्सव पर विराट् सनातनधर्म सम्मेलन, 2062 में युगसन्त श्रीमुरारीबापू द्वारा श्रीरामकथा, 2063 में श्रीरमेश भाई ओझा द्वारा श्रीमद्भागवत कथा आदि आयोजनों द्वारा जो धार्मिक चेतना जन-जन में स्फुरित करायी गयी वह सदा स्मरणीय है। प्रत्येक अधिकमास में आचार्यपीठ पर आयोजित होने वाले अष्टोत्तरशतभागवत, यज्ञानुष्ठान, प्रवचन श्रीरासलीलानुकरण आदि कार्यक्रम भी सदा प्रेरणाप्रद रहते हैं। आप द्वारा प्रतिदिन किया जाने वाला श्रीयुगलनाम-संकीर्तन भी श्रवणीय होता है। सन् 1966 में दिल्ली के विराट् गो-रक्षा सम्मेलन में आपश्री का सपरिकर पादार्पण हुआ था। इस अवसर पर स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं अन्य धर्माचार्यों से जो महनीय विचार विमर्श हुआ वह परम ऐतिहासिक है।

आपश्री ने अपने आचार्यत्व काल में जितना देश-देशान्तरों में सम्प्रदाय का वर्चस्व बढ़ाया है उतना ही देवाल्यों के निर्माण, जीर्णोद्धार, शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण-संचालन, साहित्य प्रकाशन, नूतन ग्रन्थ रचना, गोशाला, मुद्रणालय आदि संस्थाओं द्वारा आचार्यपीठ का सर्वतोभावेन विकास किया है। आपश्री द्वारा रचित 37 ग्रन्थों में से भारत-कल्पतरु ग्रन्थ का विमोचन भारत के उपराष्ट्रपति श्रीशंकरदयालजी शर्मा ने दिल्ली में किया। इसी प्रकार आपके अन्य ग्रन्थों का मूर्धन्य राजनेताओं, शीर्षस्थ महापुरुषों, जगद्गुरुओं द्वारा विमोचन समारोह सम्पन्न हुये हैं। एवं आप द्वारा प्रणीत रचनाओं पर तीन-चार शोधप्रबन्ध भी प्रस्तुत हुए हैं जो मननीय हैं। अस्वस्थ अवस्था में भी आप निरन्तर क्रियाशील रहते हैं। आपश्री का संरक्षण पाकर और आपश्री के महान् व्यक्तित्व व कृतित्व से श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय किंवा सनातन धर्म जगत् विशेषतः उपकृत हुआ है। आपके मधुर दर्शन की एक झलक पाने और आपश्री के वचनमृत सुनने के लिए धार्मिक जन सदा समुत्सुक रहते हैं।